एली वीज़ल

जनसंहार से एक संदेशवाहक

एली वीज़ल

जनसंहार से एक संदेशवाहक

कैरल ग्रीन, हिंदी : पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा
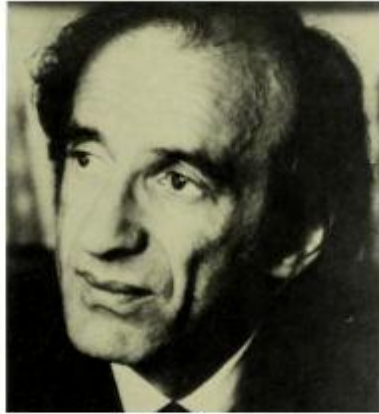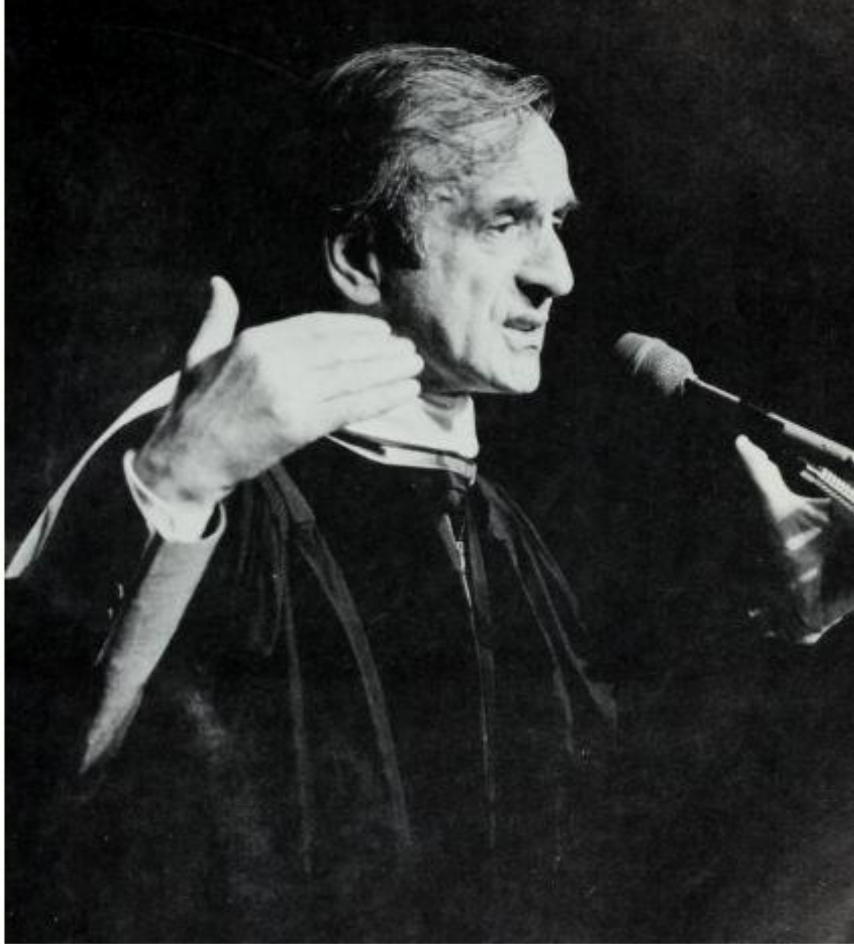
एली वीज़ल को, 5 जून 1985 को,
हार्टफोर्ड यूनिवर्सिटी ने मानद डिग्री प्रदान की.

सोमवार, 13 अक्टूबर, 1986 के दिन एली वीज़ल न्यू-यॉर्क शहर के फिफ्थ अवेनुए में स्थित सिनागोग (यहूदियों का उपासना गृह) में गए. वो योम किप्पूर का दिन था, यानी यहूदी वर्ष का सबसे पवित्र दिन. अन्य यहूदियों के साथ वीज़ल ने भी उपवास किया, प्रार्थना की.

घर लौटे समय राह में एक पत्रकार ने उन्हें रोका. उन्होंने नोबल शांति पुरस्कार जीता है, उस पत्रकार ने बताया. यह भी कहा कि उसका अख़बार उनके बारे में एक लेख छापना चाहता था. एली वीज़ल ने उसकी बात पर विश्वास नहीं किया. उन्होंने पत्रकार से कहा कि उसके अख़बार की सूचना गलत है.

पर अगली सुबह, पांच बजे, वीज़ल का फोन घनघनाया. फोन ओस्लो, नॉर्वे से आया था. जैकब स्वेरड्रुप जो नोबल इंस्टिट्यूट के निदेशक थे, ने वीज़ल को बताया कि उन्हें नोबल शांति पुरुस्कार से नवाज़ा जा रहा है.
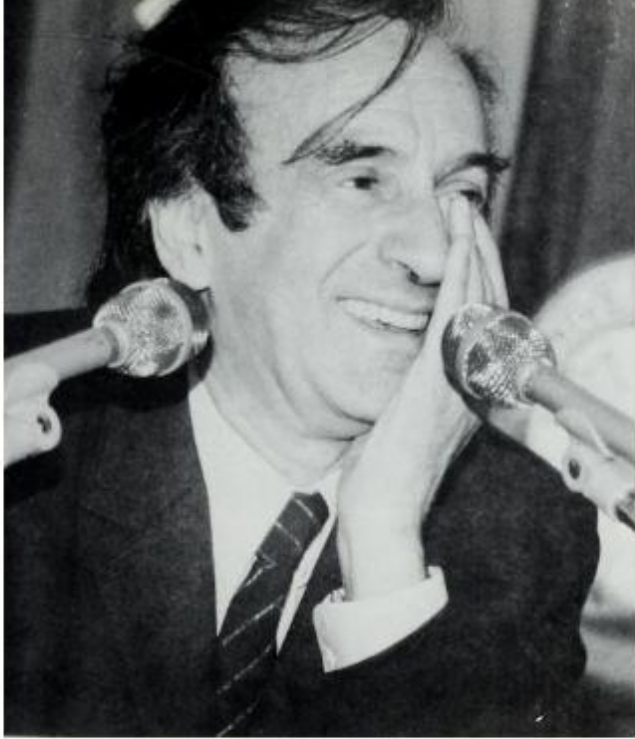
ग्यारह बजे नोबल समिति ने यह खबर सार्वजानिक की. इसके बाद वीज़ल का फोन बजना बंद ही नहीं हुआ.

हर कोई एली वीज़ल को बधाई देना चाहता था. फ्रांस के राष्ट्रपति तो उनसे संपर्क तक नहीं साध सके.

एली वीज़ल को 1986 में उनके शांति प्रयासों के लिए नोबल शांति पुरस्कार दिया गया. उनके पीछे उनका पुत्र शालोम एलिशा खड़े हैं.

नोबल पुरस्कार जीतने के लिए एली वीज़ल ने भला क्या किया? उन्होंने पुरस्कार जीता इस बात पर इतने सारे लोग आखिर खुश क्यों थे?

एली वीज़ल ने याद रखा था कि दूसरे विश्व युद्ध में यहूदियों पर क्या गुज़रा था. उन्होंने वह सब याद रखा – और उसकी कहानियां सुनाईं.

उनकी खुद की कहानी सिगैथ से आरम्भ हुई, जो कार्पेथियन पर्वतों में बसा एक क़स्बा था.

आज सिगैथ, रोमानिया का हिस्सा है. एलाईज़र वीज़ल वहां 30 सितम्बर 1928 को पैदा हुए.

उनके माता-पिता सारा व शालोम, एक दुकान चलाते थे. उनकी बड़ी बहनें, हिल्डा और बात्या माता-पिता की मदद करती थीं. बाद में एली की एक छोटी बहन त्ज़िपोरा का जन्म हुआ.

परिवार ने एली को स्कूल भेजा. इस प्रकार एली ने पढ़ना और लिखना सीखा.

उन्होंने हिब्रू भाषा का अध्ययन किया, टोरा व ताल्मुड और अन्य यहूदी लेखकों को पढ़ा. एक पुलिस कप्तान से उन्होंने वायलिन बजाना भी सीखा.

एली को जानने-सीखने का बड़ा शौक था, खास तौर से धर्म के बारे में.

कभी तो ऐसा लगता जैसे वे सीखने से कभी अघाते ही नहीं हैं. वे अन्य यहूदी लेखकों का भी अध्ययन करना चाहते थे. पर उन्हें सिखाता भला कौन?

इसी दौरान उनकी दोस्ती मोशे से हुई. मोशे एक गरीब इन्सान था जो सिनागोग (यहूदियों का प्रार्थना घर) के आसपास ही काम करता था. उसे अन्य यहूदी लेखकों के बारे में जानकारी थी. उसने एली की मदद की.

पर एली के एक और भी शिक्षक थे. उनके दादा डोद्ये फेग. वे एली को प्राचीन यहूदी कहानियां सुनाते. कभी वे पुराने गीत गाते. और कभी बिल्कुल चुप बैठते और सांझ को रात में ढलते देखते.

अडोल्फ़ हिटलर साठ लाख यहूदियों
की मौत का ज़िम्मेदार था.

पर यह सब 1944 के बसंत में समाप्त हो गया. उस समय अनेकों देश दूसरा विश्व-युद्ध लड़ रहे थे. जर्मनी के नेता अडोल्फ़ हिटलर, और उसके नात्ज़ियों की एक भयानक योजना थी. उनका सोचना था कि सबको ठीक उनकी तरह ही होना चाहिए. अगर ऐसा हो जाए तो दुनिया एक बेहतर जगह बन जाएगी. यहूदी उनके जैसे नहीं थे. सो वे अपने नियंत्रण में जितने भी देश थे, उनमें बसने वाले यहूदियों को मार डालना चाहते थे.

नात्ज़ी शासन के दौरान जर्मन बच्चों को यह सिखाया गया कि यहूदी उनके दुश्मन हैं. जर्मनी के लिए युद्ध में जान देना गौरव की बात है ताकि वे अपनी कौम को सर्वश्रेष्ठ प्रजाति बना सकें.

हाथ उठाए यहूदियों को बेरहमी से उनके घरों से निकालकर इंतज़ार में खड़ी रेलगाड़ियों की ओर ले जाया गया. इस शिविर का नाम था आउशवाइत्ज़.

पंद्रह हज़ार यहूदी सिगैथ में रहते थे. उन सब को जानवर ढोने वाले रेल के डिब्बों में भरकर पोलैंड के एक यातना शिविर – आउशवाइत्ज़ में भेजा गया.

एली और उनका परिवार भी अन्य लोगों के साथ रेलगाड़ी से उतरा. "पुरुष बायीं ओर! महिलाएं दायीं ओर!" एक नात्ज़ी पहरेदार ने हुक्म दिया.

आउशवाइत्ज़, एक नात्ज़ी मृत्यु शिविर, में पहुँचते बंदी (ऊपर). पुरुष, महिलाएं और बच्चे अलग-अलग रहते थे. ये महिलाएं (नीचे) काम आवंटित किए जाने का इंतज़ार कर रही हैं.

एली ने अपने पिता का हाथ थामे रखा. उन्हें किसी भी तरह साथ रहना था. उसने अपनी माँ और बहनों को अलग दिशा में जाते देखा. इसके बाद उसने अपनी माँ और बहन त्ज़िपोरा को फिर कभी नहीं देखा. वे आउशवाइत्ज़ में मारे गए. हिल्डा और बात्या की मौत नहीं हुई. पर एली को काफी बाद में ही इसका पता चला.

महीनों गुज़रे. एली और उसके पिता को भारी मशक्कत करनी पड़ी. उन्हें बहुत कम खाना मिलता. कभी पहरेदार उनकी पिटाई भी करते. उनके साथ रहने वाले कई लोगों को मार डाला गया. वे जानते थे कि उन्हें भी मारा जा सकता है.

आज, हर दिन उन ठेलों में ताज़े फूल रखे जाते हैं, जिनमें आउशवाइत्ज़ में शवों को जलाने के लिए भट्टियों तक ले जाया जाता था.

पच्चीस लाख लोगों को आउशवाइत्ज़ में मौत के घाट उतारा गया. पांच लाख लोग भूख से मर गए. अक्सर सैकड़ों लाशें बेदफन पड़ी रहती थीं.

अप्रैल 1945 में, अमरीकी सेना के फोटोग्राफर द्वारा लिया एक चित्र, जिसमें एली (गोल घेरे में) बुखेनवाल्ड शिविर में नज़र आ रहे हैं.

जनवरी 1945 में, नात्ज़ियों ने उन्हें एक दूसरे यातना शिविर में भेजा, जो बुखेनवाल्ड नाम से जाना जाता था. वहां, एली के पिता बीमारी और भुखमरी से मर गए. अब एली पूरी तरह अकेले थे.

11 अप्रैल, 1945 को एक अमरीकी टैंक बुखेनवाल्ड पहुंचा. आख़िरकार सभी बंदी मुक्त हुए. पर भला एली कहाँ जाते? उसके माता-पिता की मौत हो चुकी थी. सिगैथ में अब उनका कोई नहीं बचा था.

जब अमरीकी सेना ने शिविर पर कब्ज़ा कर लिया बच्चों को उपचार के लिए उन्हें एक अमरीकी अस्पताल में भेजा गया. ऐसे बच्चे कम ही थे जिनके घर थे, या परिवार के लोग उनकी देखभाल कर सकें.

एली पेरिस, फ्रांस पहुंचे. उन्होंने फ़्रांसीसी भाषा सीखी और वहां स्थित सोरबोर्न यूनिवर्सिटी में पढ़ाई की. आजीविका चलाने के लिए उन्होंने एक गायक मण्डली का नेतृत्व किया, लोगों को बाइबिल व हिब्रू सिखाई, ग्रीष्म शिविर में काम किया और अनुवाद किए.

सोरबोर्न एक समय धर्म विज्ञान (थीआलोजी) के अध्ययन के लिए यूरोप की सर्वश्रेष्ठ यूनिवर्सिटी मानी जाती थी.

बुखेनवाल्ड स्थित बंदी शिविर से आज़ाद किए गए बच्चे कैद रहने के बावजूद मुस्कुराते नज़र आ रहे हैं (बाएं). हालांकि वे टूट चुके थे और भुखमरी के शिकार थे, पर वे मौत से बच गए थे. पर लाखों अन्य लोग इतने भाग्यशाली नहीं थे. उनकी लाशों को जला दिया गया या सामूहिक कब्रों में दफना दिया गया था.

एली को अब मालूम हो गया था कि नात्ज़ियों ने 60 लाख यहूदियों की हत्या की थी. इनमें से दस लाख बच्चे भी थे. उन्होंने इनमें से कई लोगों को खुद मरते देखा था. उनकी कथाएं एली के दिमाग में अटी पड़ी थीं. वे जानते थे कि किसी दिन उन्हें यह कहानियां कहनी हैं. उन्हें "प्रमाणित करना था, गवाही देनी थी."

एली वीज़ल और नात्ज़ी यातना शिविरों से बच निकले अन्य लोग आजीवन इन स्मृतियों और उस समय की यातना को ढोते रहे.

पर इसका समय नहीं आया था. ये कहानियां बेहद कीमती, बेहद भयावह थीं, "मैं गलत शब्दों का इस्तेमाल करना नहीं चाहता था," उन्होंने स्पष्ट किया. सो उन्होंने तय किया कि वे दस वर्षों तक रुकेंगे.

इस बीच वे एक पत्रकार बन गए. उन्होंने पहले एक फ़्रांसीसी अख़बार के लिए काम किया और फिर एक इज़रायली अख़बार के लिए. 1954 में इज़रायली अख़बार ने उन्हें एक फ़्रांसीसी लेखक फ़्रांसुआ मोरिया का साक्षात्कार करने भेजा.

1952 में फ़्रांसुआ मोरिया को, उनके धार्मिक लेखन के लिए नोबल पुरस्कार दिया गया.

उस मुलाकात के दौरान कुछ ख़ास घटा. एली खुद के बारे में बोलने लगे. उन्होंने मोरिया को उन कहानियों में से कुछ सुनाईं जो उनके अन्दर घुमड़ती रहती थीं. मोरिया बस सुनते रहे. वे एक शब्द भी नहीं बोल सके. जब एली ने अपनी बात ख़त्म की तो वृद्ध लेखक ने अपनी बाहें एली के गिर्द डालीं और फफक पड़े.

मोरिया को पता था कि एली को क्या करना चाहिए. उन्हें और इंतज़ार नहीं करना चाहिए. उन्हें यह तमाम कहानियां दुनिया को सुनानी चाहिए.

लेखक एली वीज़ल अपनी रचना अगेंस्ट साइलेंस
की प्रकशित पहली प्रति के साथ.

सो वीज़ल ने लिखना शुरू किया. उनकी पहली पुस्तक काफी लम्बी थी. उसका प्रकाशन दक्षिण अमरीका में 1956 में हुआ. 1958 में एली ने उसका एक अधिक संक्षिप्त रूपांतर फ्रांस में प्रकाशित किया. पुस्तक का अंग्रेजी शीर्षक है नाईट. पुस्तक को इन शब्दों में समर्पित किया गया है, "मेरे माता-पिता व मेरी छोटी बहन की स्मृति में."

नाईट के बाद एली वीज़ल ने कई पुस्तकें लिखीं. इनमें से कुछ हैं : डॉन, द एक्सीडेंट, द टाउन बियॉन्ड द वाल, द गेट्स ऑफ़ द फारेस्ट, तथा ए बेगर इन जेरुसलम. वे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने यहूदियों के साथ जो घटा उसके लिए "जनसंहार" (होलोकास्ट) शब्द का इस्तेमाल किया.

1956 में एली वीज़ल को न्यू-यॉर्क शहर में एक टैक्सी ने टक्कर मारी. दुर्घटना के बाद उन्हें साल भर व्हील-चेयर पर गुज़ारना पड़ा. इस दौरान उन्होंने संयुक्त राज्य अमरीका का नागरिक बनना तय किया.

राष्ट्रपति रीगन से कांग्रेशनल स्वर्ण पदक स्वीकारते – अप्रैल 19, 1985

"मैं अमरीका का आभारी हूँ," उन्होंने बाद में कहा. पर आभार की इस भावना ने भी उन्हें तब आलोचना करने से नहीं रोका, जब उन्हें लगा कि उनका देश कुछ गलत कर रहा है. 1985 में उन्होंने राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन से कहा कि उन्हें जर्मनी के नात्ज़ी कब्रगाह में नहीं जाना चाहिए. उन्होंने कंबोडिया, दक्षिण अफ्रीका, होंडुरस, मध्य एशिया व अन्य स्थानों में पीड़ित के पक्ष में आवाज़ उठाई.

उन्होंने कई बार सोवियत यूनियन की यात्रायें कीं और पाया कि वहां बसे यहूदी अब भी पीड़ित हैं. इसलिए उन्होंने उनकी कहानियां भी बयां करना शुरू कीं. उनकी दो किताबें द जूस ऑफ़ साइलेंस तथा द टेस्टामेंट, सोवियत यहूदियों के बारे में हैं.

1969 में एली वीज़ल ने मैरीएन एस्टर रोज़ से विवाह किया. वे भी यातना शिविर में रह चुकी थीं. उनका एक पुत्र हुआ, जिसका नाम एली वीज़ल के पिता की स्मृति में शालोम रखा. श्रीमती वीज़ल की अपने पूर्व विवाह से एक पुत्री भी थी जिसका नाम जेनिफर था.

न्यू-यॉर्क में एक न्यूज़ कांफ्रेंस के बाद
एली अपनी पत्नी और पुत्र के साथ

वीज़ल परिवार न्यू-यॉर्क शहर में रहता है. एली भाषण देते हैं और लिखते हैं – फ्रांसीसी भाषा में. उन्होंने बाद में जो कथाएं रचीं वे उन पुराने यहूदी लेखकों व शिक्षकों के बारे में हैं, जिनसे वे बचपन में प्यार करते थे. वे बोस्टन भी जाते हैं, जहाँ वे बोस्टन यूनिवर्सिटी में शिक्षक हैं. मैरीएन उनकी रचनाओं को अंग्रेजी में अनूदित करती हैं.

वीज़ल को मानद डॉक्टर ऑफ़ ह्यूमैनिटीज़ की डिग्री प्रदान करने के बाद हार्टफोर्ड यूनिवर्सिटी के अध्यक्ष उनका स्वागत करते हुए.

राष्ट्रपति कार्टर द्वारा गठित जनसंहार (होलोकास्ट) समिति के अध्यक्ष के रूप में वाइट हाउस में व्यक्तव्य देते हुए.

एली वीज़ल ने अपने काम के लिए कई पुरस्कार जीते. इनमें से कुछ हैं – *एलेअनोर रूज़वेल्ट पुरस्कार, मार्टिन लूथर किंग मैडल, फ्रैंक व एथल कोहेन पुरस्कार, ज्यूइश बुक कौंसिल* का *साहित्य पुरस्कार, कांग्रेशनल गोल्ड मेडल ऑफ़ अचीवमेंट* तथा कई फ़्रांसीसी पुरस्कार.

1978 में राषट्रपति जिमी कार्टर ने उन्हें यूनाइटेड स्टेट्स होलोकास्ट मेमोरियल कौंसिल का अध्यक्ष बनाया.

इस परिषद के दो काम हैं. एक है लोगों को उन व्यक्तियों को याद करने में मदद करना जो नात्ज़ी जनसंहार में मारे गए थे. दूसरा है लोगों को यह सीखने में सहायता करना कि एक और जनसंहार फिर कभी दुबारा न हो.

24 अप्रैल, 1979 को, एली वीज़ल ने वाशिंगटन डी.सी. स्थित यू. एस. कैपिटल में एक व्यक्तव्य दिया.

"हम उन्हें स्वयं अपने और उनके लिए याद करें," वे बोले. "स्मरण रखना ही शायद दुनिया को उस अंतिम दंड, आणविक जनसंहार, से बचाने का हमारा एकमात्र जवाब, एकमात्र उम्मीद है."

जब नॉर्वे से वह फोन आया जिससे उन्हें नोबल शांति पुरस्कार पाने की खबर मिली, एली वीज़ल ने कहा कि वे इस समाचार से "बेहद स्तंभित और कृतज्ञ" हैं. पर तब उन्होंने वह किया, जो वे हमेशा करते आए थे. उन्होंने याद किया.

किसी भी तरह का जश्न आरंभ करने से पहले उन्होंने अपने माता-पिता, दादा-दादी के बारे में सोचा.

बाद में उन्होंने कहा कि पुरस्कार में दी जाने वाली 2 लाख 70 हज़ार डॉलर की राशि उन्हें "अधिक बुलंद आवाज़ में बोलने" और "अधिक लोगों तक पहुँचने" में मदद करेगी.

"मृतकों के प्रति मेरे कुछ क़र्ज़ हैं," वे बोले. "....जो उन्हें याद नहीं करता है वो उनसे फिर से गद्दारी करता है."

एली वीज़ल के कारण दुनिया भर के लोगों ने उनके बारे में जाना-सुना जो मारे गए थे. और उन्हें याद भी किया.

वीज़ल का भाषण

1986 में नोबल शांति पुरस्कार जीतने के बाद एली वीज़ल ने उस स्वीकारने के लिए जो व्यक्तव्य तैयार किया वह था :

मैं गहरी विनम्रता की भावना के साथ उस सम्मान को स्वीकार करता हूँ जिससे आप मुझे नवाज़ रहे हैं. मैं जानता हूँ कि यह सम्मान मुझसे परे है. यह बात मुझे भयभीत करती है और प्रसन्न भी.

प्रसन्न इसलिए, क्योंकि मैं सोचता हूँ कि क्या मुझे उन लोगों का प्रतिनिधित्व करने का सच में अधिकार है जिनका विनाश हुआ? क्या मुझे यह अधिकार है कि मैं उनकी ओर से इस महत्वपूर्ण सम्मान को स्वीकार करूं? नहीं, यह अधिकार मुझे नहीं है. ऐसा सोचना ही निरर्थक है. क्योंकि कोई भी उनकी ओर से कुछ कह नहीं सकता, उनके खंडित सपनों और आकांक्षाओं की व्याख्या नहीं कर सकता.

मुझे ख़ुशी इस बात की है कि मैं यह कह सकता हूँ कि यह सम्मान दरअसल उन तमाम लोगों और उनके बच्चों का है जो बचे रहे, और हमारे माध्यम से सभी यहूदी लोगों का है जिनकी नियति से मेरा हमेशा वास्ता रहा है.

मुझे याद है, यह कल ही की तो बात है या अनंत काल पहले की. एक यहूदी किशोर ने रात्रि (अँधेरे) का राज्य पाया था. मुझे उसकी घबराहट याद है. उसकी वेदना याद है. कितनी तेज़ी से हुआ था वह सब. घेटो (यहूदियों की घेराबंद बस्तियां). निर्वासन. इंसानों को बैठने के लिए जानवरों के डिब्बे. वह सुलगती वेदी जिस पर हमारी कौम और मानवता के भविष्य की बलि चढ़ाई जानी थी.

“क्या यह सच हो सकता है?”

मुझे याद है उस किशोर ने अपने पिता से पूछा था, “क्या यह सच हो सकता है?” यह बीसवीं शताब्दी है या मध्यकाल. कौन है जो ऐसे अपराधों की अनुमति दे रहा है? और दुनिया खामोश क्यों है?

और अब वह लड़का मेरी ओर मुड़ रहा है. “ज़रा मुझे बताओ,” वह पूछता है, “तुमने मेरे भविष्य के साथ भला क्या किया? तुमने अपने जीवन के साथ क्या किया?”

और मैं उससे कहता हूँ कि मैंने कोशिश की है. मैंने स्मृतियों को जिंदा रखने की चेष्टा की है, कि मैंने उनसे लड़ाई की है जो भूल जा रहे थे. क्योंकि अगर हम भूल जाते हैं तो हम भी दोषी हैं, हम सह-अपराधी हैं.

और तब मैंने उसे समझाया कि हम सच में कितने भोले थे कि माने बैठे थे कि दुनिया सब जानती थी फिर भी मौन रही थी. और यही कारण था कि मैंने शपथ ली कि मैं जब भी और जहाँ भी इंसानों को पीड़ित और अपमानित होते हुए देखूँगा, कभी खामोश नहीं रहूँगा. हमें हमेशा पक्ष लेना ही चाहिए. तटस्थता ज़ुल्म करने वालों की मदद करती है, पीड़ितों की नहीं. चुप्पी अत्याचार करने वाले को हौसला बढ़ाती है, जिस पर अत्याचार हो रहा हो उसका नहीं.

“हमें कभी हस्ताक्षेप भी करना चाहिए.”

कभी हमें हस्ताक्षेप भी करना चाहिए. जब इंसानों के जीवन खतरे में हों, जब मानव का आत्म-सम्मान खतरे में हो, तब राष्ट्रीय सीमाओं और संवेदनशीलताओं की प्रासिंगता नहीं रहती. जब भी पुरुषों या स्त्रियों को उनकी नस्ल, उनके धर्म, या राजनीतिक नज़रिए के कारण उत्पीड़ित किया जाता है, उस स्थान को – उसी क्षण – विश्व का केंद्र बन जाना चाहिए.

बेशक, क्योंकि मैं एक यहूदी हूँ जिसकी जड़ें पूरी गहराई से अपने लोगों की स्मृतियों व परम्पराओं में स्थित हैं, मेरी पहली प्रतिक्रिया यहूदियों के भयों, यहूदियों की ज़रूरतों, यहूदियों के संकटों के प्रति है. मैं उस सदमाग्रस्त पीढ़ी का हूँ, जिसने हमारी कौम को परित्यक्त और पूरी तरह अकेला पड़ते अनुभव किया है.

“यह सम्मान उन सभी लोगों का है जो बचे रहे.”

यह अस्वाभाविक होता अगरचे मैं यहूदियों की प्राथमिकताओं को अपनी प्राथमिकतायें नहीं बनाता - इज़राइल, सोवियत यूनियन यहूदियों की, अरब प्रदेशों के यहूदियों की.

पर अन्य मसले भी हैं जो मेरे लिए उतने ही महत्वपूर्ण हैं. नस्लभेद मेरे नज़रों में उतना ही घिनौना है जितना एंटी-सेमीतिस्म (यहूदियों के प्रति घृणा). मेरे लिए अंद्रेई सखारोव का अलगाव उतना ही शर्मनाक है जितना बोसिफ बेगन की कैद. सॉलिडेरिटी व उसके नेता लैच वलेसा के असहमति के अधिकार को नकारना भी. और नेल्सन मंडेला की अंतहीन कैद.

दुनिया में इतना अन्याय और वेदना है, हमारे ध्यान को आकर्षित करने की गुहारें हैं; कितने ही देशों में, भूख या नस्लभेद और राजनैतिक उत्पीड़न के शिकार लोगों की, बंदी लेखकों व कवियों की, फिर चाहे वहां शासन वामपंथियों का हो या दक्षिणपंथियों का. मानव-अधिकारों का हनन प्रत्येक महाद्वीप में हो रहा है. जितने लोग मुक्त हैं उससे अधिक लोग उत्पीड़ित हैं.

फिलिस्तीनी व इजराइली

और फिर फिलिस्तीन भी है, जिनकी दुर्दशा के प्रति मेरी संवेदना है, पर जिनके तौर-तरीकों से मुझे नफरत है. हिंसा और आतंकवाद जवाब नहीं है. उनकी पीड़ा के लिए कुछ किया जाना चाहिए और वो भी जल्द से जल्द. मैं इज़राएल पर भरोसा करता हूँ, क्योंकि यहूदियों में मेरी आस्था है. इज़राइल को एक मौका दिया जाए, क्षितिज पर से घृणा और खतरा मिटाया जाए, और तब ही पवित्र स्थान और उसके इर्द-गिर्द शांति स्थापित हो सकेगी.

जी हाँ, मुझमें आस्था है. ईश्वर की आस्था है, और उसकी रचना में भी. इसके बिना कोई कदम उठाया ही नहीं जा सकता है. और उदासीनता का, जो सबसे घातक खतरा है, एकमात्र उपचार है कुछ करना. और अल्फ्रेड नोबल की धरोहर का अर्थ क्या यही नहीं है? क्या उनका युद्ध का भय युद्ध के विरुद्ध एक ढाल नहीं था?

बहुत कुछ करना बचा है, बहुत कुछ किया जा सकता है. एक व्यक्ति – एक राऊल वालेनबर्ग, एक अल्बर्ट श्वाइत्ज़र, एक निष्ठावान व्यक्ति, से भी अंतर पड़ सकता है, जीवन और मृत्यु का अंतर. जब तक एक भी विरोधी कैदखाने में बंद हो, हमारी आज़ादी वास्तविक नहीं होगी. जब तक एक भी बालक भूखा हो, हमारा जीवन वेदना और शर्म से भरा होगा.

इन पीड़ितों की सबसे बड़ी ज़रुरत यह जानना है कि वे अकेले नहीं हैं, कि हम उन्हें भूल नहीं गए हैं, कि जब भी उनकी आवाजों को दबाया जाएगा हम उनको अपनी आवाज़ उधार देंगे, कि जहाँ उनकी आज़ादी हमारी आज़ादी पर निर्भर है, हमारी आज़ादी की गुणवत्ता भी उनकी आज़ादी पर निर्भर है.

“हर घंटे एक अर्पण”

यह सोचते हुए कि मैंने उसकी ज़िन्दगी के साथ भला क्या किया, उस किशोर यहूदी लड़के को मैं यही कहता हूँ. मैं उसकी ही ओर से आपसे बात कर रहा हूँ और अपना गहन आभार व्यक्त कर रहा हूँ. कोई भी दूसरा व्यक्ति उतना आभारी नहीं हो सकता जितना वह जो रात्रि के राज्य से उबर सका हो.

हम जानते हैं कि प्रत्येक पल कृपा का पल है, प्रत्येक घंटा अर्पण का; उन्हें साझा न करने का मतलब होगा उनसे गद्दारी करना. हमारे जीवन अब केवल हमारे नहीं हैं, वे उन सबके हैं जिन्हें हमारी बेहद ज़रुरत है.

धन्यवाद, अध्यक्ष आरविक. धन्यवाद नोबल समिति के सभी सदस्य. यह घोषणा करने के लिए नॉर्वे की जनता का धन्यवाद, कि हमारा बचे रहना मानवता के लिए मायने रखता है.

एली वीज़ल

कालक्रम

1928	सितम्बर 30 – सिगैथ, रोमानिया में, शालोम व सारा वीज़ल के परिवार में जन्म
1944	आउशवाइत्ज़ यातना शिविर में ले जाया गया
1945	बूखेनवाल्ड यातना शिविर में भेजा गया
1945	आज़ाद किया गया; फ्रांस गए
1948-51	सोरबोर्न, पेरिस में अध्ययन; पत्रकार के रूप में काम
1956	संयुक्त राज्य अमरीका की नागरिकता के लिए आवेदन; *एंड द वर्ल्ड हैज़ रिमेंड साइलेंट* का बयूनोस एयेर्स में प्रकाशन
1958	नाईट (ला न्यूइट) का फ्रांस में प्रकाशन
1963	अमरीका के नागरिक बने
1965	पहली बार सोवियत यूनियन की यात्रा
1969	मेरिएन एस्टर रोज़ से विवाह
1972-76	न्यू-यॉर्क की सिटी यूनिवर्सिटी में अध्यापन
1976	बोस्टन यूनिवर्सिटी में मानविकीशास्त्र के एंड्रू मैलन प्रोफेसर बने
1977	यूनाइटेड स्टेट्स के होलोकॉस्ट मेमोरियल कौंसिल के अध्यक्ष
1985	कांग्रेशनल गोल्ड मेडल ऑफ़ अचीवमेंट प्राप्त किया
1986	नोबल शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया

लेखिका के विषय में

कैरल ग्रीन ने अग्रेज़ी साहित्य व म्यूजिकोलोजी का अध्ययन किया. वो अंतर्राष्ट्रीय एक्सचेंज कार्यक्रमों में संपादक व शिक्षक के रूप में काम कर चुकी हैं. वे अब संत लुई, मिसूरी में रहती हैं और पूर्णकालिक लेखन करती हैं. उनकी पचास से भी अधिक किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं, जिनमें अधिकांश बच्चों के लिए हैं. चिल्ड्रेनस प्रेस के लिए उनके द्वारा लिखी अन्य जीवनियों में सान्द्र डे ओ'कोनर, मदर टेरेसा, इंदिरा नेहरु गांधी, डायना प्रिंसेस ऑफ़ वेल्स, और डेस्मंड टूटू की चित्र कहानी शामिल हैं. पीपल ऑफ़ डिस्टिंक्शन श्रंखला में लूईसा एम. अल्काट; मारी क्यूरी; थॉमस अल्वा एडिसन; हंस क्रिस्चियन एंडरसन, और मार्को पोलो की जीवनियाँ शामिल हैं.